(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।

1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है ?

उ- कबीरदास जी के अनुसार जब आप दूसरों के साथ मीठी भाषा का उपयोग करोगे तो उन्हें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी । वे सुख का अनुभव करेंगे और जब आपका मन शुद्ध और साफ होगा परिणामस्वरूप आपका तन भी शीतल रहेगा ।

2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है ? साखी के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिए ।

उ- तीसरी साखी में कबीर का दीपक से तात्पर्य ईश्वर दर्शन से है तथा अँधियारा से तात्पर्य अज्ञान से है । ईश्वर को सर्वोच्च ज्ञान कहा गया है अर्थात जब किसी को सर्वोच्च ज्ञान के दर्शन हो जाये तो उसका सारा अज्ञान दूर होना सम्भव है ।

3. ईश्वर कण-कण में व्याप्त हैं, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

उ- कबीरदास जी दूसरी साखी में स्पष्ट करते है कि ईश्वर कण कण में व्याप्त है । पर हम अपने अज्ञान के कारण

उसे नहीं देख पाते क्योंकि वह ईश्वर को अपने मन में खोजने के बजाये मंदिरों और तीर्थों में खोजते है।

4. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतिक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यो किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उ- कबीरदास के अनुसार संसार के वे सभी व्यक्ति जो किसी चिंता के जी रहे हैं वे सुखी है तथा जो ईश्वर वियोग में जी रहे हैं वे दुखी है। यहाँ 'सोना' 'अज्ञान' का और 'जागना' 'ईश्वर-प्रेम' का प्रतिक है। इसका प्रयोग यहां इसलिए हुआ है क्योंकि कुछ लोग अपने अज्ञान के कारण बिना चिंता के सो रहे है और कुछ लोग ईश्वर की पाने की आशा में सोते हुए भी जग रहे हैं।

5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है।

उ- अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने आस पास रखने का उपाय सुझाया है। उनके अनुसार निंदा करने वाला व्यक्ति जब आपकी गलतियां निकालेगा तो आप

इस गलती को सुधार कर अपना स्वभाव निर्मल बना सकते है।

6. "ऐसे आखिर पीव का, पढ़े सु पंडित होइ" - इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

उ- 'ऐसे आखिर पीव कर, पढ़े सु पंडित होइ' - इस पंक्ति मे कवि ईश्वर प्रेम को महत्व देते हुए कहना चाहिए है कि ईश्वर प्रेम का अक्षर ही किसी व्यक्ति को पंडित बनाने के लिए काफी है।

7. कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता प्रकट कि

उ- कबीर की साखियों मे अनेक भाषाओं का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता यह है कि इसमे भावना की अनुभूति, रहस्यवादिता तथा जीवन का संवेदनशील संस्पर्श तथा सहजता को प्रमुख स्थान दिया गया है।

(i) "बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।

उ- इस पंक्ति का भाव यह है कि जब किसी मनुष्य के मन मे अपनों से बिछड़ने का गम रूपी साँप जगह बना लेता है तो कोई दवा, कोई मंत्र काम नही आते।

(२) 'कस्तुरी कुंडलि बसै । मृग ढूंढै बन माँहि ।'

उ- इस पंक्ति का भाव यह है कि अज्ञान के कारण कस्तूरी हिरण पूरे में कस्तूरी की सुगंध की स्रोत की ढूंढता रहता है जबकि वह तो उसी के पास नाभी में विद्यमान होती है ।

(३) 'जब मैं था तब हरि नहीं । अब हरि हैं मैं नहीं ।'

उ- इस पंक्ति का भाव यह है कि अहंकार और ईश्वर एक दूसरे के विपरीत हैं जहाँ अहंकार है वहां ईश्वर नहीं, जहाँ ईश्वर है वहाँ अहंकार का वास नहीं होता ।

(४) 'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा । पंडित भया न कोइ ।'

उ- इस पंक्ति का भाव यह है कि किताबी ज्ञान किसी को पंडित नहीं बना सकता । पंडित बनने के लिए ईश्वर - प्रेम का एक अक्षर ही काफी है ।

साखी

1. कबीर किसकी त्याग करने के लिए कहते हैं ?

उ- कबीर अहंकार की त्याग करने के लिए कहते हैं ।

2. आपा से आप क्या समझाते हैं ?

उ- आपा से हम अहंकार समझाते हैं ।

3. कस्तुरी कहाँ होता है ?

उ- कस्तुरी हिरण के नाभी में होता है ।

4. हिरण क्यों भटकता रहता है ?

उ- हिरण कस्तुरी के खोज में वन भटकता रहता है ।

5. हिरण के नाभी में क्या होता है ?

उ- हिरण के नाभी में कस्तुरी होता है ।

6. ईश्वर को कहाँ खोजना चाहिए ?

उ- ईश्वर को अपने दिल में खोजना चाहिए ।

1. सारा संसार क्यों सुखी है ?

उ- कबीर सारा संसार मोह-माया के बंधन में आकर खा-पीकर आराम और सुखी से सो रहा है

2. कौन सोते और खाते है ?

उ- मनुष्य जो मोह-माया से जुड़े हैं वो खाते और सोते हैं

3. कबीर क्यों दुखी हैं ?

उ- वे दुखी हैं क्योंकि प्रभु की प्राप्ती के लिए वे रोते हैं

4. कबीर क्यों रोते है

उ- कबीर प्रभु की प्राप्ती के लिए दिनभर रोते रहते हैं ।

5. भुजंगम से आप क्या समझते हैं ?

उ- भुजंगम के मतलब सांप होता है ।

6. किसकी बिरह के बारे में कबीर कहते हैं ?

Date
Page

उ- आपनों के बिछड़ने का बिरह के बारे में कबीर कहते हैं।

7. निंदक को अपने पास क्यों रखना चाहिए?

उ- निंदक को अपने पास अपनी गलत की स्वभाव के लिए रख चाहिए

8. निंदक को कहाँ रखना चाहिए?

उ- निंदक को अपना निकट मे रखना चाहिए।

9. स्वभाव कैसे निर्मल होगा?

उ- अगर हम अपने गलती सुधारेंगे और तो हम निर्मल हो सकते है।